आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं।। २१ ।।

सब अज्ञानता मिटा दी है। अब सुन्दरसाथ इस प्रकाश वाणी के प्रकाश को देखकर आएंगे। यह लीला बहुत भारी है, इसलिए अब कहां तक कहूं?

या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार।
तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए।। २२ ।।

इस वाणी का इतना विस्तार है जैसे एक दरिया का बाढ़। सुन्दरसाथ कितना ग्रहण करेगा? इसलिए मैंने ज्यादा नहीं कहा।

याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन।
जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर।। २३ ।।

इस वाणी के एक वचन का भी थोड़ा सा विचार करे तो एक क्षण में घर की पहचान हो जाएगी। जो परमधाम की आत्माएं होंगी वह इन वचनों को कभी नहीं छोड़ेंगी।

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर।। २४ ।।

इन वचनों को सुनते जिसे आवेश आ जाता है, वही तारतम वाणी के फल को (परमधाम) को ग्रहण कर लेगा। श्री महामतिजी कहती हैं कि इस ज्ञान को हृदय में रखो।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

गुननकी आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हें बहुत कुछ कह दिया है, ताकि तुम्हारे अन्दर कोई संशय न रह जाए। इसलिए मैं कुछ अपनी तरफ से कहती हूं।

मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही।
मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार।। २ ।।

मैंने धाम धनी के गुणों को लिखा तो है पर एक संशय मेरे मन में रह गया है। मैंने गुण लिखते समय बहुत बड़े-बड़े शब्द कहे हैं। उसका विचार सुन्दरसाथ किस तरह से करेंगे?

जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध भले दीजे दस लाख।
पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन।। ३ ।।

जब तक अपनी आत्मा ही अन्दर से न स्वीकार करे तब तक भले ही दस लाख बार किसी को समझाया जाए तो भी उसे एक वचन का असर नहीं होता। उसे अपनी आत्मा, बुद्धि और मन में समझना जरूरी है।

ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुखथें कहे पर अर्थ ना लहे।। ४ ।।

इसलिए मेरे दिल में एक बात आई कि सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का संशय न रहे। जैसे प्रवाही भी अपने मुंह से बड़े-बड़े शब्द बोलते हैं, परन्तु उनके अर्थ नहीं समझते।

Nijanand App

सूईके नाके मंझार, कुंजर कई निकसे हजार।
ए अर्थ भी होसी इतहीं, तारतम आसंका राखे नहीं।।५।।

सुई की नोंक में से हजारों हाथी निकल गए। तारतम वाणी इसका अर्थ यहीं जाहिर कर देगी और कोई संशय नहीं रहेगा।

मैं गुन लिखते कही लेखन अनी, ए आसंका जिन होसी घनी।
कथुए के पांऊ प्रवान, कलमे गढ़िया हाथ सुजान।।६।।

गुण लिखते समय मैंने कलम की नोंक की बारीकी के बारे में कहा था कि कथुए के पांव के समान मैंने बड़ी सावधानी से कलमें बनाईं। यह भी एक शंका वाली बात हो सकती है।

तिनकी भी मैं करी चीर, गुन जेती उतारी लीर।
अब जिन किनको संसे रहे, तारतम संसे कछू ना सहे।।७।।

फिर उन कलमों को मैंने बीच में चीरा और जितने गुण उतने ही बारीक छिलके उतारे। तारतम ज्ञान से यह संशय भी किसी का नहीं रहेगा। तारतम वाणी किसी का संशय बाकी रखती ही नहीं।

या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्मसृष्ट सिरदार।
ए चौद भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार।।८।।

इसके ऊपर भी अपना एक विचार बताती हूं। हे मेरे सिरदार (प्रमुख) सुन्दरसाथजी! सुनो, चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के जिस आकार को देखते हो, उसके मूल का भी विचार करो।

याको सास्त्र सुपनांतर कहे, कोई याको जीव याको ना लहे।
ए सुपन मूल तो है समरथ, याके मूल को देखो अर्थ।।९।।

सब शास्त्र इसे सपने का कहते हैं, परन्तु इसके अन्दर रहने वाले जीव इस तरह से नहीं मानते। इस सपने को बनाने वाला अक्षरब्रह्म समर्थ है। अब उसके मूल के भेद को समझो।

सुपन मूल तो नींद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नहीं।
याको पेड़ कछू न रह्यो लगार, कथुए के पांउ का तो मैं कह्या आकार।।१०।।

सपने का मूल तो नींद है। जब जागते हैं तो सपना उड़ जाता है। इस सपने का तो जागने पर कुछ भी आकार नहीं रहता, परन्तु कथुआ भले कितना छोटा क्यों न हो उसका रूप तो है।

बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार।
एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार।।११।।

महामतिजी कहती हैं कि चौदह लोकों के पेड़ रूपी इस ब्रह्माण्ड के आकार और विस्तार को देखो, जो बिना आधार का है, परन्तु कथुए के जीव का कुछ तो आकार है तो उसका विस्तार क्यों न हो।

यों सूई के नाके मांहें, कई लाखों ब्रह्मांड निकसे जांए।
अब ए नीके लीजो अर्थ, गुन लिखने वालो समरथ।।१२।।

इस तरह से सुई के एक छेद में से कई लाखों ब्रह्माण्ड जो सपने के हैं, निकल जाते हैं। इसके अर्थ को तुम अच्छी तरह से समझना, क्योंकि गुणों को इस तरह से लिखने वाला सर्वशक्तिमान है।

अब केता कहूं तुमको विस्तार, एक एह सब्द लीजो निरधार।
फेर फेर कहूं मेरे साथ, नीके पेहेचानो प्राण को नाथ।।१३।।

हे सुन्दरसाथजी! अब ज्यादा विस्तार से क्या बताएं? इस एक शब्द से ही अपने प्राणनाथ धनी को पहचान लेना और ग्रहण कर लेना।

Nijanand App

गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह।
इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए।। १४ ।।

गुण लिखने वाले भी यही प्राणनाथ हैं जो अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इनको अपना दिल दो। जिन्होंने हमारे ऊपर इतने एहसान किए हैं, वह यही अपने धनी हैं।

तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले।
तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे साथजी! अब तुमको कुछ कहना हो तो कहो। लाभ लेना है तो लो। तारतम वाणी कहती है, मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! आओ, तुम्हारा हजार बार स्वागत है।

मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा।
धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा।। १६ ।।

माया को छोड़ दो और व्यर्थ में आवागमन के चक्कर में मत पड़ो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा।
संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा।। १७ ।।

यदि अब की बार चूक गए तो ऐसा घाव लगेगा जो सहन नहीं होगा, अर्थात् जन्म-मरण में पड़ना होगा। संसार में कुछ भी नहीं है, इसलिए धनी के गुण गाओ।

लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो।
प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे।। १८ ।।

अपने मूल परमधाम की भावनाओं को समझ कर अपनी चाहनाओं को पूरा करो और प्रेम से धनी को अपना लो, जिससे तुम्हें सब कोई वाह-वाह कहे।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १०६० ।।

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।। १ ।।

हे मेरे पिउजी! मैं आपके एहसानों, जो आपने मेरे ऊपर किए हैं, का कहां तक वर्णन करूं? यह मेरी बुद्धि झूठे आकार की है, इसलिए इस जबान से वर्णन कैसे करूं?

माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी।
सब सुख दिए जगाए के, कई विध के दृष्टांत जी।। २ ।।

हमने परमधाम में जो माया मांगी थी वह दिखाकर हमारे संशय मिटा दिए और तरह तरह के दृष्टान्त देकर जागृत करके सुख दिए हैं।

बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी।
रासके सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी।। ३ ।।

ब्रज के सुख भी यहां आकर आपने बेशुमार दिए तथा रास के सुख देकर अपने समान कर लिया।

Nijanand App